गोविंदा आला रे आला...

झाँको... मनमोहन की झाँकी में

सभी श्रीकृष्ण को सुंदर कहते, सोलह कला सम्पूर्ण मानते, उसके मनमोहक रूप को देखने लिए लालायित रहते, लेकिन हमने कभी सोचा कि हममें भी ये सुंदरता है, जिसे हमने अभी तक निहारा ही नहीं। हममें निहित कलाओं के ऊपर भी क्या कभी हमारा ध्यान गया? तो मनमोहन की झाँकी के साथ अपने अंदर भी झाँक कर देखो तो आप पायेंगे कि आप भी इतने ही सुंदर और आकर्षक हैं।

श्रीकृष्ण की झाँकियां तो हम हर वर्ष बड़ा ही आकर्षक बनाते हैं और बनायें भी क्यों ना, वो है ही इतना आकर्षक! परंतु आज आवश्यकता इस बात की है कि हम स्वयं में झाँककर देखें कि क्या हम भी इतने ही आकर्षक हैं? हमारे दामन में कहीं कोई दाग तो नहीं! तब पायेंगे कि अरे, हम सभी आज अपने ही संस्कारों से परेशान हैं, दुःखी हैं और दूसरे भी हमारे संस्कारों की वजह से दुःखी हैं।

आज के परिदृश्य को देखें तो पायेंगे कि हर क्षेत्र में तमो की प्रधानता है। ऐसे में श्रीकृष्ण की झाँकी और श्रीकृष्ण का आह्वान कहाँ तक सार्थक है! श्रीकृष्ण के मंदिरों में हर प्रकार की स्वच्छता बरती जाती है, शुद्ध भोजन का भोग लगाया जाता है। लोग अशुद्ध संकल्पों, व्यवहारों एवं विकारों से भी बचकर रहते हैं। इसलिए सबसे पहले श्रीकृष्ण का आह्वान करने के लिए हमें आहार, व्यवहार, विचार के शुद्धिकरण की आवश्यकता है। आज घर घर में विषय-वासनाओं का वास है। सभी के मन में दर्द है, असंतोष है। श्रीकृष्ण के पधारने के लिए कोई जगह ही खाली नहीं है। सभी के हृदय रूपी सिंहासन पर किसी न किसी विकार ने कब्ज़ा किया हुआ है। उस मधुसूदन को अशुद्ध हाथ छू नहीं सकते, अपवित्र दृष्टि देख नहीं सकती, अपवित्र वृत्ति वाले लोग उसके पास पहुंच भी नहीं सकते, विकारी व्यक्ति का हाथ उसके लिए भोजन बना नहीं सकता। इसलिए जब तक दिव्य गुणों की खुशबू से नर-नारी का मन मंदिर नहीं बनेगा, तब तक श्रीकृष्ण, जो देवताओं के भी सम्राट हैं, वो यहाँ आ नहीं सकते। इसलिए हे मानव, इस पुरुषार्थ से अपने आप को उस मनमोहक की झाँकी को देखने योग्य बनाओ। स्वयं को ज्ञान योग के चंदन का तिलक दो, तब जाकर जन्माष्टमी के साथ सच्चा न्याय होगा।

हम इस बार परंपरागत रूप से ही कृष्ण की झाँकी बनाकर इस महान त्योहार को मनायेंगे या अपने मन को भी उस मनमोहक की तरह बनायेंगे, जिस मुरलीधर को हम जाने अनजाने भी भूल

नहीं पाते! आज के दौर में आवश्यकता है अपने मन में उठने वाले राक्षसी वृत्तियों का संहार कर मन को मनमोहन जैसा सुंदर बनाने की। तो आइये, इस तरह से इस बार हम जन्माष्टमी के त्योहार को मनाकर अपने जीवन में देवत्व लाने का संकल्प लें।

ज्ञान के नित्य अध्ययन से बनेगा जीवन सुंदर

- गतांक से आगे... रोज़ जब अपने मन को ज्ञान की बातों से स्वच्छ करते जायेंगे तो मन सुन्दर, निर्मल, पवित्र होने लगेगा। कई बार कई लोग कहते हैं कि हमारे मन के अन्दर कभी-कभी बहुत बुरे विचार चलते हैं, चाहते नहीं हैं फिर भी चल जाते हैं। क्या करें?

एक मटका है जिसके अन्छर गंदा पानी भरा है। मटका फिक्स है, उसको उठा नहीं सकते हैं। तो क्या करेंगे? साफ पानी का नल खोल दो, वो पानी गिरते-गिरते फिर अन्दर का पानी ओवरफ्लो होता जायेगा और ओवरफ्लो होते...होते...होते..., एक समय ऐसा आयेगा कि मटके के अन्दर से सारा गंदा पानी निकल गया होगा और वह साफ पानी से भर गया होगा।

जिस प्रकार गंदे पानी से भरे मटके में साफ पानी लगातार डालते रहने से एक समय ऐसा आता जब उसकी सारी गंदगी खत्म हो जाती और साफ पानी रह जाता, उसी प्रकार नकारात्मकता से भरी बुद्धि को ज्ञान की बातों से, ज्ञानामृत से सींचते जाओ तो वो किचड़ा निकल जायेगा और एक दिन मन बुद्धि दोनों स्वच्छ और निर्मल बन जायेंगे।

ठीक इसी तरह बुद्धि के अंदर नकारात्मक सोचने की आदत पड़ी हुई है, उसको निकालने की विधि क्या है? उसको निकालने की विधि यही है कि रोज़ उसको ज्ञान की बातों से, ज्ञानामृत से, सींचते जाओ तो वो किचड़ा निकलता जायेगा... और एक समय आयेगा जब मन और बुद्धि स्वच्छ और निर्मल बन जायेंगे। तो क्या हम अपने मन और बुद्धि को इतना स्वच्छ और निर्मल बनाना नहीं चाहते हैं? उसके लिए तो अध्ययन करने की आवश्यकता है। तब हमारा मन स्वच्छ और निर्मल हो जायेगा।

अंत में संजय यही कहता है कि इस प्रकार हमने व्यास जी की कृपा से ये अद्भुत संदेश सुना, जो मेरे शरीर को भी रोमांचित कर रहा है। जब मैं इस पवित्र वार्ता का बारंबार स्मरण करता हूँ, तब प्रति-क्षण गद्गद् हो उठता हूँ। जहाँ योगेश्वर है, वहाँ ऐश्वर्य, विजय, अलौकिक शक्ति तथा

-ब्र.कु. उषा,वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

नीति भी निश्चित रूप से रहती है। ऐसा मैं मानता हूँ। संजय ने जो अनुभव किया वही धृतराष्ट्र को सुनाया। इतना सुन्दर संदेश कि उसकी स्मृति करने से भी मैं गद्गद् हो उठता हूँ। रोज़ उसका अध्ययन करेंगे तो जीवन कितना सुन्दर बन जायेगा! अंत में भगवान अर्जुन से पूछते हैं कि क्या तुमने इस गुह्य ज्ञान को एकाग्रचित्त होकर सुना है? क्या अब तुम्हारा अज्ञान और मोह दूर हो गया है? तो अर्जुन कहता है, हे प्रभु! अब मेरा मोह दूर हो गया है। वह प्रभु की शरण में आ गया और कहा कि अब मेरा मोह दूर हो गया। आपके अनुग्रह से मुझे स्मृति आ गई है, अब मेरे मन में कोई संशय नहीं, कोई सवाल नहीं है। अब मैं संशय रहित तथा दृढ़ हो गया हूँ कि मुझे क्या करना है। अपने जीवन में उसके लिए मैं दृढ़ हूँ और आपके वचन का पालन करूंगा।

आज इस अठारहवें अध्याय के अंतिम क्षण में जब हम पहुँचे हैं, क्या आपकी तरफ से, हम यह निश्चय करें कि आप भी अठारह अध्याय का ज्ञान सुनकर के अनुग्रहित हुए हैं? तो क्या आप अपने मन के अन्दर भी कोई दृढ़ संकल्प करना चाहेंगे अर्जुन की तरह? जैसे अर्जुन ने संकल्प किया कि मैं दृढ़ हूँ, मैं आपके वचनों का पालन करूंगा, संशय रहित अब मेरा मन स्वच्छ हो गया है। अब मेरे मन में कोई संशय नहीं है। कम से कम इतना संकल्प हम सभी अवश्य करें कि आज के बाद नित्य प्रतिदिन कभी भी सारे दिन में, कभी भी ज्ञान की बातों से, अपने मन को निरंतर सुविचारों से भरते हुए, हम अपने जीवन को सुंदर, सुगंधित, खुशबूदार बनाते हुए, अपने गृहस्थ जीवन को सुखमय बनायेंगे।

- क्रमशः

यह जीवन है...

पाने को कुछ नहीं, ले जाने को कुछ नहीं, उड़ जाएंगे एक दिन तस्वीर से रंगों की तरह, हम वक्त की टहनी पर बैठे हैं परिंदों की तरह।
खटखटाते रहिए दरवाज़ा, एक दूसरे के मन का, मुलाकातें ना सही, आहटें आती रहनी चाहिए।
ना राज़ है ज़िन्दगी
ना नाराज़ है ज़िन्दगी
बस जो है, वो आज है, ज़िन्दगी।

ख्यालों के आईने में...

ज़िन्दगी को गमले के पौधे की तरह मत बनाओ जो थोड़ी सी धूप लगने पर मुरझा जाये... ज़िन्दगी को जंगल के पेड़ की तरह बनाओ जो हर परिस्थिति में मस्ती में झूमता रहे।

कहीं मिलेगी ज़िन्दगी में प्रशंसा,
तो कहीं नाराज़गियों का बहाव मिलेगा...
कहीं मिलेगी सच्चे मन से दुआ,
तो कहीं भावनाओं में दुर्भाव मिलेगा...
तू चलाचल राही अपने कर्मपथ पर,
जैसा तेरा भाव वैसा प्रभाव मिलेगा...।

ब्यावर-राज.। विश्व तम्बाकू निषेध दिवस पर एल.आई.सी. के जनरल मैनेजर कैलाश चंद को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. संचिया तथा ब्र.कु. नागेश।